

कब्रों से फ़ैज़ के अक़ीदे का तहकीक़ी जाइज़ा

“कुरआन-ए-हकीम” और इमाम-उल-अंबिया वल मुरसलीन ﷺ की “सहीह अहादीस” की तालीमात की रौशनी में”

❶ **إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ** ❶ हम से रोज़ाना 5 वक़्त की नमाज़ों की तमाम रकअतों में यह अज़ीम वादा लेता है

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “ऐ अल्लाह ﷻ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और ऐ अल्लाह! हम तुझ ही से ग़ायब में मदद मांगते हैं (यानी तुझ ही से दुआ मांगते हैं।)” {सूरतुल फ़तिहा : आयत 4} [सूरा الفاتحة : آیت نمبر 4]

❷ **وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ**

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “ऐ महबूब ﷻ! और जब आप ﷻ से मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक पूछें, (तो आप ﷻ फ़रमाओ) यकीनन मैं बिल्कुल नज़दीक हूँ, कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की पुकार (दुआ) को, जब वह मुझे पुकारता है, पस उन्हे भी चाहिये कि मेरा हुक्म माने (मेरी इबादत करें और दुआ भी मुझ ही से मांगें) और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह कामयाबी पा सकें।” {सूरा البقرة : آیت نمبر 186} [سورة البقرة : آیت نمبر 186]

❸ **أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ إِنَّهُ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ**

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “(ज़रा बताओ तो) कौन कुबूल करता है बेकरार की फ़रियाद को जब वह उस (अल्लाह) को पुकारे, और दूर कर देता है तकलीफ़ को, और तुम्हें ज़मीन में खलीफ़ा बनाता है (अगलों का) क्या अल्लाह के साथ और कोई माबूद भी है? (मगर) तुम (इस हकीक़त पर) कम ही ग़ौरो-फ़िक्र करते हो” {सूरा النمل : آیت نمبر 62} [سورة النمل : آیت نمبر 62]

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** इमाम उल अंबिया वल मुरसलीन ﷺ ने सय्यिदना इब्ने अब्बास رضی الله عنه को नसीहत फ़रमाई “ऐ बेटे! तू अल्लाह के अहकाम की हिफ़ाज़त कर अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। अल्लाह के हुक्क का ख़याल रख तू उसे अपने सामने पाएगा। और जब तू सवाल करे तो सिर्फ़ अल्लाह से सवाल करना। और जब तू मदद तलब करे तो सिर्फ़ अल्लाह से मदद तलब करना और जान ले कि अगर पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो अल्लाह चाहे और अगर पूरी उम्मत जमा होकर तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो अल्लाह चाहे। कलम उठ गये और सहीफ़े ख़ुशक हो गए। {जामे तिमिज़ी “किताबुल सिफ़तुल क़यामह” हदीस न० 2516}

[جامع ترمذی “کتاب صفة القيامة” حدیث نمبر 2516]

नताइज़: मन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) आयात व सहीह हदीस पढ़ने के बाद “दुआ (ग़ायब में मदद के लिये पुकारने) से मुताल्लिक दो अहम तरीन नताइज़ निकलते हैं।

❶ दुआ “इबादत” की एक आला किस्म है और अल्लाह के साथ ख़ास है।

❷ अल्लाह के अलावा किसी और से “दुआ” मांगना गोया उसे “माबूद” बना लेने के जैसा है। लिहाज़ा यह अमल ख़ालिसतन शिर्क और नाक़ाबिले माफी गुनाह है (नऊजु बिल्लाह ﷻ) ﴿نَعُوذُ بِاللّٰهِ﴾

“अहले सुन्नत का दावा करने वाले ❶ बरेलवी, ❷ देवबंदी, ❸ सलफी (अहले हदीस) के बा-शउर अवाम उन्नास” के लिए दावत-ए-फ़िक्र

5 तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہ रिवायत करती हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ मर्ज़-ए-वफ़ात में मुब्तला थे तो बार-बार अपनी चादर मुबारक को अपने चेहरे मुबारक पे डालते और जब चादर की वजह से घबराहट शुरू हो जाती तो उसे अपने चेहरे मुबारक से हटा देते। और इसी हालत में फ़रमाते जाते थे :

﴿لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ﴾

तर्जुमा: अल्लाह ﷻ की लानत हो यहूदियों और नसानियों (ईसाइयों) पर कि उन्होंने अपने अंबिया की कब्रों को मस्जिद बना लिया था। सय्यिदा आयशा फ़रमाती हैं “अगर यह ख़ौफ़ ना होता कि रसूलुल्लाह ﷺ की कब्र पर लोग सज्दे शुरू कर देंगे। तो आप ﷺ की कब्रे मुबारक को (ज़ाइरीन की जियारत के लिये) खुला छोड़ दिया जाता मगर आप ﷺ को यही ख़ौफ़ था जिसकी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ इस अमल से बचने की तल्कीन कर रहे थे।”

{सहीह बुखारी “किताबुल जनाइज़” हदीस न० 1390, सहीह मुस्लिम “किताबुल मसाजिद” हदीस न० 1183}

[صحیح بخاری ” کتاب الجنائز “ حدیث نمبر 1390 ، صحیح مسلم ” کتاب المساجد “ حدیث نمبر 1183]

6 तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہ का बयान है कि उम्मेहातुल मौमिनीन सय्यिदा उम्मेसलमा رضی اللہ عنہ और उम्मेहबीबा رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने मरज़े-वफ़ात में एक गिरजे का ज़िक्र किया जो उन्होंने सरज़मीन-ए-हब्शा में देखा था और उसे “मारिया” कहा जाता था, और उन्होंने उस गिरजे में लटकी हुई कुछ तस्वीर का ज़िक्र भी रसूलुल्लाह ﷺ के सामने किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया “यह लोग ऐसे थे कि जब उनमें से कोई नेक आदमी मर जाता तो वे उसकी कब्र पर मस्जिद बना लेते और फिर उसमें उसकी तस्वीरें लटका देते, क़यामत के दिन यह लोग अल्लाह के नज़्दीक बदतरीन मख़लूक शुमार होंगे।” {सहीह बुखारी “किताबुल जनाइज़” हदीस न० 1341, सहीह मुस्लिम “किताबुल मसाजिद” हदीस 1180}

[صحیح بخاری ” کتاب الجنائز “ حدیث نمبر 1341 ، صحیح مسلم ” کتاب المساجد “ حدیث نمبر 1180]

7 तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं “सय्यिदना उमर बिन ख़ताब के ज़माने में जब लोग कहतसाली का शिकार हो जाते तो सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के वसीले से बारिश की दुआ करते और यूँ अर्ज़ करते “ऐ अल्लाह बेशक पहले हम अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और उनकी दुआ से तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। आप ﷺ के बाद अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर लेकर आये हैं। पस उनकी दुआ से हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा। (रावी कहते हैं) यूँ उन पर बारिश बरस पड़ती। {सहीह बुखारी “ किताबुल इस्तिस्का” हदीस 1010}

[صحیح بخاری ” کتاب الاستسقاء “ حدیث نمبر 1010]

नताइज: ❶ सय्यिदिना उमर बिन ख़ताब رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ की आलातरीन “बर्जखी ज़िन्दगी” के बारे में जानते हुए भी आप ﷺ की कब्र मुबारक पर जाकर दुआ नहीं की क्योंकि अल्लाह के अलावा किसी और हस्ती से दुआ करना (गैब में मदद मांगना) ख़ालिसतन शिर्क और नाक़ाबिले माफ़ी गुनाह है। ❷ सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ की कब्र मुबारक पर जाकर आप ﷺ से वसीला के तौर पर दुआ नहीं करवाई बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ के चचा को वसीला के तौर पर लाकर उनसे दुआ करवाई। और यूँ उम्मत मुहम्मदिया ﷺ को यह अक़ीदा समझा दिया कि “सहीह वसीला शख़्सी” किसी की कब्र मुबारक पर जा कर उनसे मांगना या उनसे दुआ करवाना हरगिज़ नहीं है, बल्कि “दुनिया में मौजूद” नेक ज़िन्दा आदमी से दुआ करवाना है और इस अक़ीदे पर उम्मत का इज्मा है। (अल्हम्दु लिल्लाह ﷻ)

कब्रों से फैज़ का अक्कीदा रखने वाले उलेमा के हवालाजात

3

नोट: कुरआन व सुन्नत के वाज़ेह दलाईल के बरअक्स इंडिया और पाकिस्तान के मशहूर उलेमा और बुजुर्गों की खुद साख्ता अक्काइद व नज़रियात मुलाहीज़ा फ़रमाइए:

1 उलेमा का अक्कीदा “अब्रहा मशाइख की रुहानियत से इस्तफ़ादा और उनके सीनों और कब्रों से बातिनी फ़ुयूज़ हासिल करना तो बेशक सहीह है मगर उस तरीके से जो उसके अहल और ख़्वास को मालूम है ना उस तर्ज़ से जो अवाम में राइज़ है।” (देओबंदी बुजुर्ग: मौलाना खलील अहमद सहारनपुरी साहब “अल्मुहन्नद अलल मुफ़न्नद” (जवाब न०11) सफ़्हा न०40) (मक्तबा अल इल्मि लाहौर)

[दीوبंदी बزرग : مولانا خليل احمد سهارنپوری صاحب ”المهند علی المهند“ (جواب نمبر 11) صفحہ نمبر 40] مکتبہ العلم لاہور

2 उलेमा का अक्कीदा “कब्र का तवाफ़-ए-ताज़ीमी मना है और अगर बरकत लेने के लिये गिर्द ए मज़ार फिरा तो कोई हर्ज नहीं। मगर अवाम मना किये जाएं बल्कि अवाम के सामने किया भी ना जाए कि कुछ का कुछ समझेंगे।” (बरेल्वी बुजुर्ग: मौलाना अहमद अली कादरी रिज़वी साहब “बहारे शरियत” (हिस्सा 4, कब्र व दफ़न का बयान) सफ़्हा 314) (शब्बीर ब्रदेर्स लाहौर)

[بریلوی بزرگ : مولانا امجد علی قادری رضوی صاحب ”بهار شریعت“ (حصہ چہارم، قبر و دفن کا بیان) صفحہ نمبر 314] شبیر برادرز لاہور

3 उलेमा का अक्कीदा मौलाना सय्यिद मनाज़िर हसन गिलानी साहब मौलाना कासिम नानोत्वी साहब “बानी दारुल-उलूम देओबंद” के मुताल्लिक मौलाना मंसूर अली खान साहब से नक़ल करते हैं: “मौलाना कासिम नानोत्वी साहब अगर अकेले किसी मज़ार (बुर्जुग की कब्र) पर जाते, और कोई दूसरा शख्स वहाँ मौजूद नहीं होता, तो आवाज़ से अर्ज़ करते “आप मेरे वास्ते दुआ करें” { देओबंदी बुजुर्ग: मौलाना सय्यिद मुनाज़िर हसन गिलानी साहब “सवानेह कासमी” (जिल्द 2) सफ़्हा 29) (मक्तबा रहमानिया लाहौर)

[दीوبंदी بزرگ : مولانا سید مناظر احسن گیلانی صاحب ”سوانح قاسمی“ (جلد نمبر 2) صفحہ نمبر 29] مکتبہ رحمانیہ لاہور

4 उलेमा का अक्कीदा मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब खुद लिखते हैं “मैं अपने हज़रत (देओबंदी और बरेल्वी उलेमा के मुश्तरका (common) रुहानी पेशवा शैख इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की साहब) की खिदमत में गिज़ाए-रूह का वह सबक जो हज़रत शाहनूर की शान में है, सुना रहा था, जब असर मज़ार शरीफ़ का बयान आया तो आप (शैख मुहाजिर मक्की साहब) ने फ़रमाया: मेरे हज़रत का एक जोलाहा मुरीद था। हज़रत के इन्तिक़ाल के बाद उनके मज़ार शरीफ़ पर अर्ज़ किया कि हज़रत मैं बहुत परेशान हूँ और रोटियों का मुहताज हूँ कुछ दस्तगीरी फ़रमाइये हुक्म हुआ कि तुमको हमारे मज़ार से दो आने या आधा आना रोज़ मिला करेगा। एक मर्तबा मैं मज़ार शरीफ़ की हाज़िरी को गया तो वही जोलाहा भी हाज़िर था। उसने कुल कैफ़ियत बयान करके कहा: मुझे हर रोज़ वज़ीफ़ा कब्र से मिला करता है इस वाकिए पर मौलाना थानवी साहब का तब्सिरा है। “यह मिन्जुम्ला करामात के हैं”

{ देओबंदी बुजुर्ग: मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब “इमदाद-उल-मुश्ताक़” (वाकिया न०290) सफ़्हा न०144} (बुक कॉर्नर झेलम)

[दीوبंदी بزرگ : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب ”امداد المشتاق“ (واقعة نمبر 290) صفحہ نمبر 144] بک کارز جہلم

5 उलेमा का अक्कीदा मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब, मौलाना कासिम नानोत्वी साहब “बानी दारुल-उलूम देओबंद” के मुताल्लिक मौलाना हबीबुर्हमान साहब से नक़ल करते हैं: कि देवबंद के दो उस्ताद: मौलाना अहमद हसन अमरोहवी साहब और मौलाना फ़ख़ूल हसन गंगोहवी साहब के दरमियान बाहम तनाजा हुआ तो मौलाना महमूदुल हसन साहब असल झगड़े में शरीक ना होने के बावजूद इस मामले में आए, मगर गैरजानिबदार ना रह सके और किसी एक जानिब झुक गए इसी दौरान मौलाना रफीउद्दीन साहब ने मौलाना महमूदुल हसन साहब को अपने हुजरे में बुलाया और कहा पहले ये मेरा रूई का लाबादा देख लो, सख़्त सर्दी का मौसम था इसके बावजूद मौलाना का लबादा ख़ूब तर था और भीग रहा था। फिर मौलाना रफीउद्दीन साहब ने फ़रमाया वाकिआ यह है कि अभी अभी मौलाना नानोत्वी साहब जस्दे-उन्सुरी के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए थे,

4

[دیوبندی بزرگ : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب ” ارواحِ ثلاثہ “ (حکایت نمبر 247) صفحہ نمبر 233] ﴿ مکتبہ رحمانیہ لاہور ﴾

[دیوبندی بزرگ : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب ” ارواحِ ثلاثہ “ (حکایت نمبر 366) صفحہ نمبر 302] مکتبہ رحمانیہ لاہور

[دیوبندی بزرگ: مولانا محمد زکریا صاحب ” فضائل صدقات “ (حصہ دوم، ساتویں فصل، واقعہ نمبر 16) صفحہ نمبر 711] ﴿ کتب خانہ فیضی لاہور ﴾

[دیوبندی بزرگ: مولانا محمد زکریا صاحب ”فضائل صدقات“ (حصہ دوم، ساتویں فصل، واقعہ نمبر 24) صفحہ نمبر 716] ﴿کتب خانہ فیضی لاہور﴾